# श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

## ॥ श्री गीत गोविंद॥

माई री मैंने लीन्हो गोविन्दो मोल।
कोई कहे छाने, कोई कहे चुपके,
मैंने लीयो री बजन्ता ढोल।

कोई कहे महँगो, कोई कहे सस्तो,
मैं तो लीयो री तराजू तोल।

कोई कहे कालो, कोई कहे गोरो,
मैंने लीयो री अमोलक मोल।

कोई कहे घर में, कोई कहे बन में,
लीनो राधा के संग कलोल।

मीरा के प्रभु गिरधर नागर,
यो तो आवत प्रेम के मोल।

## ॥ गीतम् 16 ॥

(अथ षोडशप्रबन्धो देशाङ्करागेण रूपकताले गीयते)

अनिलतरलकुवलयनयनेन ।
तपति न सा किसलयशयनेन ॥
सखि या रमिता वनमालिना ॥ 1॥

विकसितसरसिजललितमुखेन ।
स्फुटति न सा मनसिजविशिखेन ॥ 2॥ सखि या

अमृतमधुरमृदुतरवचनेन ।
ज्वलति न सा मलयजपवनेन ॥ 3॥ सखि या

स्थलजलरुहरुचिकरचरणेन ।
लुठति न सा हिमकरकिरणेन ॥ 4॥ सखि या

सजलजलदसमुदयरुचिरेण ।
दलति न सा हृदि चिरविरहेण ॥ 5॥ सखि या

कनकनिकषरुचिशुचिवसनेन ।
श्वसिति न सा परिजनहसनेन ॥ 6॥ सखि या

सकलभुवनजनवरतरुणेन ।
वहति न सा रुजमतिकरुणेन ॥ 7॥ सखि या

श्रीजयदेवभणितवचनेन ।

प्रविशतु हरिरपि हृदयमनेन ॥ ४॥ सखि या